एक बार महात्मा गांधी ने कहा था कि भारत, गांवों में बसता है और यही उसकी आत्मा और शरीर है, लेकिन आज भारत के गांव मुश्किलों से जूझ रहे हैं, क्योंकि वे अपने से अधिक मांग वाले शहरों से कहीं पीछे छूट गए हैं, जहां पढ़े-लिखे और संपन्न लोगों में गहरी असमानताएं हैं। इस बात पर किसी का ध्यान नहीं है कि इतने बड़े देश में कई छोटे कस्बे उभर रहे हैं, जो आगे बढ़ते हुए देश को यह बताने की कोशिश करते हैं कि हम भी हैं और दौड़ने लायक हैं और कुछ तो जीत भी रहे हैं। मैं यह सब होते देख रहा था और 'बरेली की बर्फी' जैसी फिल्मों ने भारतीय विकास की इस नई खोज में कहने को कोई शब्द नहीं छोड़ा है। फिल्म का शीर्षक ही इस बात को दिखाता है। बिट्टी मिश्रा बनी अभिनेत्री कीर्ति सेनन इस कहानी को बखूबी कहती हैं। एक युवा उत्साही और बिंदास लड़की, जो सिगरेट फूंकती है, स्वभाव से लापरवाह और बोझिल है, उसने शादी के बाजार में खुद को रिजेक्ट बना दिया है, वहीं दूसरी तरफ दूल्हा है, जो रसोई में रोटी बनाती दुल्हन का सपना देखता है, लेकिन बिट्टी इनमें से नहीं है। वो तय करती है कि उसे ऐसा नहीं बनना है। घर छोड़ देती है और जिंदगी बदलने के लिए निकल पड़ती है। जिंदगी में बदलाव उस घटना से आता है, जब वह रेल में सफर करती है।

'एस दुर्गा' की दुर्गा को कोई नहीं जानता!

ये सब देखने के लिए फिल्मकार अश्विनी अय्यर तिवारी के काम को देखना होगा, जिन्होंने हर उस जगह पर अपना कैनवास फैलाने की कोशिश की है, जहां जिंदगी नजर आती है और यह जिंदगी भारत के छोटे शहरों में है, जहां लोग संस्कृति से जुड़े हैं और परिवार ही नहीं, मित्रों से भी प्यार करते हैं, लेकिन वे कुछ हद तक आजादी भी चाहते हैं, जो उन्हें रूढ़िवाद के बंधन से मुक्त कर दे। बिट्टी भी ऐसी ही है, जो सिगरेट फूंकती है, शराब पीती है और बरेली की शादी-पार्टियों में ब्रेक डांस करती है।

इसी रास्ते पर सनल शशिधरन की 'एस दुर्गा' की हीरोइन राजश्री देशपांडे भी हैं, जो छोटे से शहर की बात कहने की कोशिश कर रही हैं। वो वही कहना चाहती हैं, जैसा सब कुछ दिखता है। कैरो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में **'सेक्सी दुर्गा'** नाम से फिल्म दिखाई गई (भारत के बाहर इसी नाम से है), जहां फिल्म को खूब तारीफ मिली, वहीं महाराष्ट्र के औरंगाबाद की राजश्री के बारे में कोई बात नहीं हुई। कोई माने या न माने, फिल्म पर इतने हल्ला-बोल और गोवा में फिल्म फेस्टिवल के बाद भी शायद ही कोई राजश्री देशपांडे के बारे में जानता हो। जिन लोगों ने शशिधरन

काहिरा से गौतमन भास्करन

के काम पर लिखा है और उनके काम को देखा है, उन्हें भी याद नहीं कि इस फिल्म की अभिनेत्री राजश्री हैं। कैरो फिल्म फेस्टिवल में उनसे बात करने का मौका मिला, तो महसूस किया कि यह युवा, जो बहुत कुछ कहने का साहस रखती है, उन्हें फिल्म के नाम 'सेक्सी दुर्गा' में कुछ गलत नहीं लगता। इस फिल्म से जुड़े सभी लोग समझदार हैं। वो कहते हैं कि यह फिल्म अच्छा नमूना है, ये बताने के लिए कि महिलाओं के लिए पुरुष क्या अनुभव करते हैं। ये वैसा ही है, जैसा हम फिल्म में देखते हैं... वैन में दो लोगों के साथ दुर्गा और उसके बॉयफ्रेंड कबीर (कन्नन नायर) को देख कर जैसा अनुभव होता है।

बात ये है कि राजश्री ने मेरे सवाल का जवाब देते हुए कोई आसान रास्ता नहीं अपनाया, बल्कि विद्रोही तेवर दिखाते हुए, सब कुछ साफ-साफ कह दिया कि मैं उस जगह से आती हूं, जो भारत की हरी-भरी और छोटी-सी जगह है, जहां सामाजिक तौर पर ऐसी बातें करना, हिला देने वाला है। राजश्री भी बेबाक सोच रखती हैं और समाज से अलग सोचती हैं। उन्होंने कहा कि सनल और मैंने इस नाम पर सोच-विचार किया था और फिर यह सफर शुरू हुआ था। उन्होंने चुटकी ली कि **'इसके साथ ही हम आगे बढ़े।'** शशिधरन मेरी एक्टिंग प्रतिभा से प्रभावित थे। शशिधरन के काम का हिस्सा बनना हिम्मत की बात है और इसके लिए भी उनके जैसी ही हिम्मत वाला होना भी। यह तूफान में तिनके के उड़ने जैसा है। उन्होंने अपनी अगली फिल्म 'डेथ ऑफ इनसेन' के लिए भी मुझे चुना है। यह सब कुछ सपना है और सपने सच हो सकते हैं।

ये भी सच है कि राजश्री अब निर्माता अनुराग कश्यप के साथ काम करने जा रही हैं। 'सेक्रेड गेम' के लिए जल्द ही शूट करेंगी, जिसमें वह सैफ अली खान, नवाजुद्दीन सिद्दीकी और राधिका आप्टे के साथ हैं। उन्होंने बताया कि दिसंबर के पहले हफ्ते में लौट कर परागवे छुट्टी पर जाएंगी। मुझे एक ब्रेक की जरूरत है। दो साल से लगातार काम कर रही हूं, तो कैरो ने सीधे परागवे उतरूंगी, उन्होंने बताया। **क्या पति भी साथ होंगे?** बोलीं- नहीं, मैं अकेले ही यात्रा करूंगी। मैं जिप्सी ट्रेवलर हूं। हम दोनों के बीच जो भी है, वह साफ है। मैं ऐसा करती तो नहीं हूं, लेकिन महसूस करती हूं कि आजाद खयाल होना और उसके लिए जिंदगी को महसूस करना चाहती हूं। मैं औरंगाबाद में अपने शुरुआती दिनों से बहुत कुछ सीख चुकी हूं। फिर भी मुझे लगता है कि नंदिता दास की आने वाली फिल्म 'मंटो' (जो कान में दिखाई गई थी) जिंदगी का टर्निंग पाइंट होगी।

नंदिता दास ने हाल ही में टाइम्स लिटरेरी फेस्टिवल में बताया था कि उनका किरदार इस्मत चुगताई की बॉयोपिक से प्रेरित है। इसमें 1942 की उनसे जुड़ी कुछ बातें हैं। फिल्म में कुछ ऐसे दृश्य भी हैं, जो महिला उर्दू लेखक को लेकर फिल्माए हैं। इसमें मंटो के पाकिस्तान चले जाने पर भी बहुत कुछ कहा है। हम नहीं जानते कि असल में हुआ क्या था, लेकिन हमें पता है कि उनके भारतीय दोस्तों ने उन्हें चिट्ठियां लिखीं और भारत आने के लिए पूछा भी था। ये चिट्ठियां अब तक सामने नहीं आई हैं। बहुत कुछ है, जो पढ़ा नहीं गया है और इन पर बहुत सी बातें हुई हैं। एक सीन ऐसा भी है, जिसमें मंटो की पत्नी साफिया (रसिका दुग्गल, जो अनूप सिंह की फिल्म 'किस्सा' में नजर आई थीं) हैं, जिन्होंने इस्मत को ये चिट्ठियां पढ़ने के लिए जोर डाला था। खैर, राजश्री के लिए चुगताई का किरदार आसान नहीं था!